



उद्देश्य:
उत्तर आ दक्षिण भारतीय
शास्त्रीय सङ्गीतमे राग आ लय के
अवधारणाकेँ बुझब ।.

आहाँकेँ बूझल अछि की .

हिन्दुस्तानी सङ्गीतक ताल प्रणालीमे पहिल
मात्राकेँ साम कहल जाइत अछि ।.

अध्याय 8

भारतीय सङ्गीतमे ताल अथवा तालम आ राग अथवा रागम



0680CH08

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय सङ्गीतमे ताल

केहरवा ताल

Matra: 8

Vibhag: 2

Tali: on 1 *matra*

Khali: on 5 *matra*

<i>Taal signs</i>	X				0			
<i>Matra</i>	1	2	3	4	5	6	7	8
<i>Bols</i>	Dha	Ge	Na	Ti	Na	Ka	Dhin	Na

दादरा ताल

Matra: 6

Vibhag: 2

Tali: on 1 *matra*

Khali: on 4 *matra*

<i>Taal signs</i>	X			0		
<i>Matra</i>	1	2	3	4	5	6
<i>Bols</i>	Dha	Dhin	Na	Dha	Tu	Na

Teen Taal

Matra: 16

Vibhag: 4

Tali: on 1, 5, 13 *matra*

Khali: on 9 *matra*

<i>Taal signs</i>	X				2				0				3			
<i>Matra</i>	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
<i>Bols</i>	dha	dhin	dhin	dha	dha	dhin	dhin	dha	dha	tin	tin	ta	ta	dhin	dhin	dha

आहाँके बूझल अछि की

मृदङ्ग मृदङ्गक ओस्ताद सङ्गीत कलानिधि आ पद्म भूषण सँ सम्मानित पालघाट मणि अय्यर अपन पहिल प्रस्तुति तखन देलनि जखन ओ 10 वर्षक छलाह। ओ तंजावुर श्री वैद्यनाथ अय्यरक अधीन प्रशिक्षण लेलनि। मणि अय्यर मात्र लयबद्ध समर्थन प्रदान करबाक बदला मृदङ्ग पर सङ्गीत वाक्यांशकेँ सक्रिय रूपसँ समर्थन करबाक अवधारणाक परिचय देलनि। ओ अपन समयक कतेको प्रमुख कलाकारक सङ्ग छलाह। हुनक प्रशंसक लोकनि सेहो हुनक थानी आवर्तनम (सोलोस)क आनन्द लेलनि। हुनक कतेको छान लोकप्रिय कलाकार बनि गेलाह।



कर्नाटक सङ्गीतमे तालम

कर्नाटक सङ्गीतमे तालक उपयोग ताल रखबाक लेल कयल जाइत अछि। प्रत्येक तालमे तालक एकटा निश्चित संख्या होइत अछि आ एकरा दोहरायल जाइत अछि। एकरा ताल चक्र वा आवर्तनम कहल जाइत अछि। तालक भागकेँ अङ्गमक नामसँ जानल जाइत अछि। तीन अंग अछि:

लघु — ई थोपड़ी अछि आ ओकर बाद आङ्गुर गानब अछि। ई 3, 4, 5, 7 अथवा 9 बीट भऽ सकैत अछि। एकरा एहि रूपमे देखाओल गेल अछि | एकर बाद बीटक संख्या (सबस्क्रिप्ट जहिना) अछि।

जखन लघुक तीन ताल होइत अछि तखन हम एकरा तिश्रा जाति कहैत छी।

जखन लघुक चारिटा ताल होइत अछि तखन हम एकरा चतुराश्र जाति कहैत छी।

जखन लघुक पाँच ताल होइत अछि तखन हम एकरा हन्दा जाति कहैत छी।

जखन लघुक सात ताल होइत अछि तखन हम एकरा मिश्र जाति कहैत छी।

जखन लघुमे नौ ताल होइत अछि तखन हम एकरा संकीर्ण जाति कहैत छी।

धृतम — ई थोपड़ी अछि जकर बाद हाथक लहर अबैत अछि। एकर दूटा धड़कन अछि। एकरा O के रूपमे दर्शाओल गेल अछि।

अनुधृतम — ई मात्र थोपड़ी अछि। एकर एकटा बीट अछि आ आहाँक रूपमे प्रदर्शित कयल जाइत अछि आ उपरोक्त दुनूक तुलनामे एकर उपयोग कम कयल जाइत अछि।

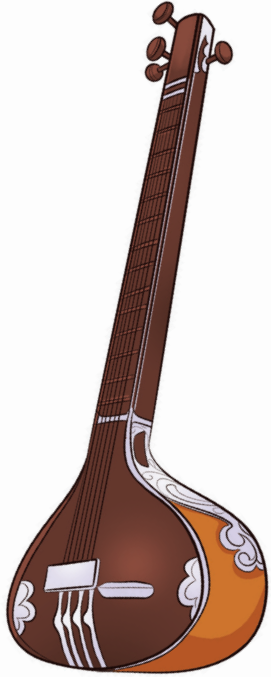
आउ देखैत छी जे लघु आ धृतमकेँ तालक रूपमे कोना प्रस्तुत कयल जाइत अछि।

रूपक तालम — एहि तालममे एकटा धृतम होइत अछि आ ओकर बाद एकटा लघु होइत अछि। अतः चतुराश्र जाति रूपक ताल छओ ताल (4 + 2) के चक्र अछि। एकरा O केर रूपमे दर्शाओल गेल अछि |₄ O O

आदि तालम — एहि तालममे एकटा लघु होइत अछि आ ओकर बाद दूटा धृतम होइत अछि। ई आठ तालक चक्र अछि (4 + 2 + 2)। एकरा एहि रूपमे दर्शाओल

रोचक पद

कर्नाटक सङ्गीत शब्द	हिन्दुस्तानी सङ्गीत शब्द
विविधता	राग
आरोहणम	आरोहा
अवरोहणम	अवरोह
गमकाम	गामाक
लयम	लय



गेल अछि / ओ ओ । भारतीय सङ्गीतमे राग

भारतमे शास्त्रीय सङ्गीतक दूटा अलग-अलग शैली अछि - कर्नाटक वा दक्षिण भारतीय शास्त्रीय सङ्गीत, आ हिन्दुस्तानी वा उत्तर भारतीय शास्त्रीय सङ्गीत। प्रत्येक शैलीक स्वरक व्याख्या आहाँकेँ पहिलुक पृष्ठमे कयल गेल अछि। कर्नाटक सङ्गीतमे वीणा, वायलिन, बाँसुरी, नादस्वरम, मृदंग, घाटम, कांजीरा आ मोरसिंग सन वाद्ययन्त्रक उपयोग कयल जाइत अछि। ई रचना सामान्यतः संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आ तमिल भाषामे होइत अछि। हिन्दुस्तानी सङ्गीतमे तानपुरा, सितार, सरोद, सारंगी, सन्तूर, तबला, आ पखावज सन वाद्ययन्त्रक प्रयोग होइत अछि। गीतक रचना सामान्यतः हिन्दी, संस्कृत आ बृजभाषामे कयल जाइत अछि।

राग आ तालक विषयमे बुझबाक लेल वीडियो देखू।

राग एकटा सरगम पर आधारित अछि। प्रत्येक सरगममे आरोही (आरोहण) आ अवरोही (अवरोहण) क्रममे स्वर (स्वर) होइत अछि। स्वर सँ बनल सीढ़ी के कल्पना करू। सरगममे स्वर रागक अनुसार बदलैत अछि।

सङ्केतन योजना.

उच्च सप्तक (तार सप्तक) मे स्वर लिखैत काल स्वरक प्रतिनिधित्व शीर्ष पर एकटा बिन्दु द्वारा एहि तरहँ कयल जाइत अछि, एस. निचला सप्तक (मन्द्र सप्तक) मे स्वरकेँ एहि तरहँ नीचा एकटा बिन्दु द्वारा दर्शाओल गेल अछि, । मध्य सप्तक (मध्य सप्तक)क स्वरकेँ मात्र एहि तरहक स्वर द्वारा प्रदर्शित कयल जाइत अछि, एस।

रागक जाति

रागमे स्वरक एकटा विशिष्ट समूहक लेल प्रयुक्त एकटा आओर रोचक शब्दावली जानल जाय। जँ कोनो रागमे पाँच स्वर होइत अछि तँ ओकरा औदव जातिक नामसँ जानल जाइत अछि। जँ कोनो रागमे छओ स्वर होइत अछि तँ ओकरा शादव जाति कहल जाइत अछि। जँ कोनो रागमे सातटा स्वर होइत अछि तँ ओकरा सम्पूर्ण जातिक नामसँ जानल जाइत अछि।

गतिविधि 1: राग भूप

राग भूपमे निम्नलिखित स्वर अछि:

आरोह/आरोहण: एस आर जी पी डी ग

अवरोह/अवरोहना: डी पी जी आर एस

राग हमसाध्वानीमे निम्नलिखित स्वर अछि:

आरोह/आरोहण: एस आर जी पी एन ग अवरोह/

अवरोहना: एन पी जी आर एस

जँ आहाँ गमक (अलंकरण)क उपयोग, किछु स्वरकेँ दोहराकऽ आ विशेष वाक्यांश बजा कऽ एकटा सरगम सजबैत छी तँ ई राग बनि सकैत अछि। प्रत्येक राग महत्वपूर्ण स्वर आ विशेष वाक्यांशसँ अलंकृत अछि।

संस्कृतमे रागक अर्थ किछु एहन होइत अछि जे मनकेँ रङ्ग दैत अछि। प्रत्येक राग मनमे किछु भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करैत अछि। एकरा रस कहल जाइत अछि।

राग आ ओकर मनोदशाक विषयमे बेसी बुझबाक लेल राग आ रस पर वीडियो देखू!

भारतीय शास्त्रीय सङ्गीतमे, रचना राग (राग), ताल (ताल),

आ गीत (जं कोनो अछि) सन सङ्गीत तत्वसभक संरचित व्यवस्थाकेँ संदर्भित करैत अछि। भारतीय



शास्त्रीय सङ्गीतक रचनासभकेँ सामान्यतः हिन्दुस्तानी शास्त्रीय सङ्गीतमे बंदिश आ कर्नाटक शास्त्रीय सङ्गीतमे कृति कहल जाइत अछि।

गतिविधि 2: राग बिलावल मे स्वर्ण मालिका सीखू

सरगम (स्वर) मे गाओल जायवला रचनाकेँ स्वरमालिका कहल जाइत छैक। स्वरमालिकाक रचना अलग-अलग रागक उपयोग करैत कयल जा सकैत अछि। राग बिलावलमे स्वरमालिका सुनियौ, तीनताल पर सेट करू।

Swaramalika

Raga: Bilawal

Tala: Teentaal

Composer: Traditional

Aroha: S R G M P D N Ś

Avaroha: Ś N D P M G R S

Sthayi

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
S	P	M	G	R	G	R	S	S	R	S	N	D	N	S	-
S	G	R	M	G	P	M	G	G	M	P	M	G	R	S	-

Antara

P	Ś	N	D	P	M	P	D	N	-	Ś	-	Ṙ	Ṙ	Ś	Ś
Ś	Ṙ	Ġ	Ṙ	Ś	N	D	P	Ś	N	D	P	M	G	R	S

रोचक पद

राग यमनक प्रमुख मनोदशा श्रृंगार वा प्रेम अछि। एहि रागमे बहुत रास लोकप्रिय फिल्मी गीत रचल गेल अछि! एहि राग पर आधारित किछु लोकप्रिय गीत तबकबाक प्रयास करू। ओकरा सीखू आ गाउ।

गतिविधि 3: राग यमनमे बंदिश सीखू

राग यमनमे बंदिश सीखबाक लेल ई वीडियो देखू।

राग यमनमे आरोह वा आरोही स्वर अछि, एन आर जी एम डी एन।

अवरोह अथवा अवरोही नोट एकरामे

राग यमन अछि, एन डी पी एम जी आर एस।

ध्यान दियौ जे एम नियमित एम सँ बेसी अछि जे आहाँ पहिने गओने छी। एकटा स्वरमे ई छोट-छोट बदलाव गीतक मनोदशाकें बदलि दैत अछि!

एहि गीतमे भगवान कृष्ण बाँसुरी बजबैत छथि आ वृन्दावनक गोपिकासब एकर राग पर नाचैत वर्णन कयल गेल अछि।

भाषाक विरुद्ध

Sthayi								Taal - Teentaal							
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
						P	PM	GR	SN	D	N	R	GM	P	M
						Aa	ja	Ba	ja	ii	Ka	nh	Ban	-	su
P	-	R	R	G	-	P	PM	G	R	S	N	R	GM	P	M
ri	-	-	-	-	-	Aa	ja	Ba	ja	ii	Ka	nh	Ban	-	su
P	-	R	R	G	P	M	D	P	-	M	M	G	-	PM	GR
ri	-	-	-	-	Mo	ha	la	yi	-	Sa	ga	ri	-	Bri	ja
R	G	R	S	-	S										

येमेनी राग

छोट खयाल — कान्हा बाँसुरी स्थायी

गुरु बिन कइसे गन गई, गुरु ना माने त गन नइखे अइले
गनियाँ मयवे गिने कहावे.

अंतरा

माने त रिजवे सबको चरन गहे सादिकान के जब आवे
अचपल ताल सुर.

Antara															
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	
			2				0								
							-	P	-S	S	S	S	S	-	
							-	Brin	-da	-	va	na	ki	-	
ND	N	R	N	ND	P	-	-	M	DN	S	S	S	S	-	
un	ja	Ga	li	na	mei	-	-	Brin	da	-	va	na	ki	-	
ND	N	R	N	ND	P	-	-	M	D	M	DN	RN	N	ND	
un	ja	Ga	li	na	mei	-	-	San	ga	Li	ye	--	Bri	kha	
-	R	R	RG	PR	P	PM									

आहाँके बूझल अछि की

पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय सङ्गीतमे सङ्केतन प्रणालीक विकास कएलनि। ओ पेशासँ ओकील छलाह, आ हुनका बहुत स्मृति आ बुद्धि छलनि। ओ सङ्गीतकारसभसँ भेंट करबाक लेल आ हुनकालोकनिसँ रचना सङ्कलन करबाक लेल पूरा देशक भ्रमण कएलनि। बहुत रास उत्पीड़नक बावजूद, ओ बहुत रास अलग-अलग रचना एकलित कएलनि आ सङ्केतक अनुसार क्रमिक पुस्तक मालिका (छओ भाग) मे दस्तावेजीकरण कएलनि, ओ विकसित कएलनि।



राग यमन (क्रमिक पुस्तक मालिका – भाग 1) मे गुरु पर बंदिश सीखू

स्थायी

गुरु बिन कइसे गन गई, गुरु ना माने त गन नइखे अइले
गनियाँ मयवे गिने कहावे।

अंतरा

माने त रिजवे सबको चरन गहे सादिकान के जब आवे
अचपल ताल सुर।

शराब – हम।

*s कोनो शब्दक विस्तारकेँ देखाबैत अछि।

* - हिन्दुस्तानी सङ्गीत सङ्केतन प्रणालीमे स्वरक विस्तारकेँ देखाबैत अछि।

Sthayi

Dha dhin dhin dha	Dha dhin dhin dha	Dha tin tin taa	Ta dhin dhin dha
		P P N D Gu ru bi na	P D P - Kai - Se -
M R M M Gu na gaa -	P - - - Ye - - -	P N D P Gu ru naa maa	- M G R - ne to -
G R GMP R Gu n naa hee	S R S - Aa - ye -	S S R R Gu nee ya n	G M M - mey - vey -
P P - N Gu ni - ka	M D P - Ha - ve -		

Antara

		P - P M Maa - ne -	G - To -
G P S D Jha - vey -	S S S S Sa ba ko -	S S G R Ch r n Ga	S R hey -
N D S S di - ka na	N N M P Ke - Ja b	P G P - Aa - ve -	G R A ch
SR GG PD NS Ta - - la	ND PM GR SS - - - sur		

कर्नाटक सङ्गीतक त्रिमूर्ति कर्नाटक सङ्गीतक त्रिमूर्ति

त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितर आ श्यामा शास्त्री कर्नाटक सङ्गीतक त्रिमूर्तिक रूपमे जानल जाइत छथि । हुनका लोकनि केँ कर्नाटक सङ्गीतक अग्रणी सङ्गीतकार मानल जाइत अछि । त्यागराजक मुद्रा (हस्ताक्षर शब्द) त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितरक गुरुगुहा आ श्यामा शास्त्रीक श्यामा कृष्ण छलाह । त्यागराजक गीत बेसीतर भगवान रामक स्तुतिमे छल । मुथुस्वामी दीक्षितर संस्कृतक विद्वान छलाह, आ सभ देवताक स्तुतिमे कृति गबैत छलाह । श्यामा शास्त्री देवी कामाक्षी पर विद्वान रचनाक रचना कएलनि ।

गतिविधि 4: रागम कल्याणी मे गीतम

सीखू रागम कल्याणीमे गीतमक स्वर (स्वर) आ साहित्य (गीत) सीखबाक लेल ऑडियो सुनू । गीतम कर्नाटक शास्त्रीय सङ्गीतमे कोनो देवता वा देवीक स्तुतिमे एकटा रचना थिक । ई गीतम रागम कल्याणीमे रचित अछि आ त्रिपुट ताल पर आधारित अछि । त्रिपुट ताल सात ताल लयबद्ध चक्र अछि जे 3+2+2 क रूपमे विभाजित अछि । कल्याणीमे स्वर एम केँ छोड़िकय शंकरभरणम के स्वर जकाँ होइत अछि । कल्याणीमे एम बेसी अछि ।

गीतक बोल

कमला जड़ला विमला सुनयना
करिवरदा करुणाम्बुधे करुणा सारदे कमलाकान्त केशी
नरकासुर विभेदन वरदा वेलपुरा सुरोत्तमा करुणा
शरधे कमलाकान्त

ई गीत भगवान विष्णुक विषयमे अछि जे ब्रह्माण्डक रक्षक छथि ।

ई गीत हुनक करुणा आ महिमाक वर्णन करैत अछि ।

Kamalajaadala

Ragam: Kalyani

Tala: Tripura

Composer: Purandaradasa

Arohanam: S R₂ G₃ M₂ P D₂ N₃ S

Avarohanam: S N₃ D₂ P M₂ G₃ R₂ S

S Ka	S ma	S la	N jaa	D	N da	S la
N Vi	D ma	P la	D Su	P na	M ya	P na
G Ka	M ri	P va	P ra	D da	D Ka	N ru
D naam	P	M bu	P dhe	G	R	S
D Ka	N ru	D na	G Sha	R ra	G dhe	,
M Ka	P ma	,	M laa	G	R	S
R kaan	,	,	S ta	,	S	,
G Ke	M	P shi	M Na	P ra	D kaa	P
N su	D ra	P Vi	D bhe	P	M da	P na
G Va	M ra	P da	P Ve	D	D laa	N
D pu	P ra	M Su	P ro	G	R tta	S ma
D Ka	N ru	D na	G Sha	R ra	G dhe	,
M Ka	P ma	,	M laa	G	R	S
R kaan	,	,	S ta	,	S	,

रागम कल्याणीमे किछु स्वर वार्म-अप एतय अछि । हुनका सभ के सुनू आ अभ्यास करू ।

गायन तकनीक

गमक विशेष सजावट अछि जकर उपयोग सङ्गीतकार अपन सङ्गीतकें बेसी सुन्दर आ अभिव्यंजक बनयबाक लेल करैत छथि। नोटक पिचकें अगिला स्वर पर दोलन अथवा ग्लाइडिंग द्वारा संशोधित कयल जाइत अछि।

रागम कल्याणीमे किछु स्वर वार्म-अप एतय अछि।
हुनका सभ के सुनू आ अभ्यास करू।

1.

Ś	N	D	P	M	G	R	S
S	,	,	,	S	,	,	,
G	R	S	Ṃ	S	R	G	M
S	R	G	M	P	D	N	Ś

2.

Ś	N	D	P	M	G	R	S
S	,	,	,	S	,	,	,
G	R	S	Ṃ	S	S	Ṃ	S
S	Ṃ	S	R	G	M	P	M
G	R	S	Ṃ	S	R	G	M
S	R	G	M	P	D	N	Ś

3.

Ś	N	D	P	M	G	R	S
S	,	,	,	S	,	,	,
G	R	S	Ṃ	Ḍ	Ṃ	S	Ṃ
S	Ṃ	S	R	G	M	P	M
G	R	S	Ṃ	S	S	Ṃ	S
S	Ṃ	S	R	G	M	P	M
G	R	S	Ṃ	S	R	G	M
S	R	G	M	P	D	N	Ś

4.

Ś	N	D	P	M	G	R	S
S	,	,	,	S	,	,	,
G	R	S	Ṃ	Ḍ	Ḍ	Ḍ	Ṃ
S	Ṃ	S	R	G	M	P	M
G	R	S	Ṃ	Ḍ	Ṃ	S	Ṃ
S	Ṃ	S	R	G	M	P	M
G	R	S	Ṃ	S	S	Ṃ	S
S	Ṃ	S	R	G	M	P	M
G	R	S	Ṃ	S	R	G	M
S	R	G	M	P	D	N	Ś

